बनारस घराने के अद्वितीय कलाकार स्व0 पं0 रामजी मिश्र–सांगीतिक योगदान

सोनम सक्सैना

वाराणसी नगरी भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगरी के रुप में विख्यात है। भारतवर्ष की समृद्ध नगरी वाराणसी सदियों से भारतीय संस्कृति की पोषक रही हैं। वाराणसी में ऐसे प्रतिभा–सम्पन्न कलाकार हुए है, जो गायन, तबला, सारंगी, सितार, नृत्य इत्यादि सभी विधाओं में पारंगत एवं मान्य विद्वान हैं। उन्हीं सम्पन्न कलाकारों में से स्व, पं0 रामजी मिश्र ऐसे कलाकार हुए जिन्होने तबले के अस्तित्व को एक नई दिशा दी हैं।

पं0 रामजी मिश्र जी ने अपना तन, मन व धन संगीत पर न्यौछावर कर दिया। पं0 रामजी मिश्र ने बनारस घराने को आगे बढ़ाने में जो योगदान दिया, वह कोई आम आदमी नहीं कर सकता। वह उच्च श्रेणी के वादक, शिक्षक, रचनाकार आदि सब कुछ थे। पं0 रामजी मिश्र जी ने अपने शिष्यों को खुले मन से शिक्षा दी। उन्होने अपने शिष्यों को निस्वार्थ बनारस की बन्दिशों को सिखाया। जैसाकि विदित है सब घरानों की अपनी–अपनी शैली है, जो प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक वैसी ही चली आ रही हैं। लेकिन बनारस घराने में चार प्रकार का तबला बजाया जाता रहा हैं। बनारस में चार प्रकार के तबला वादन में अन्तिम व सबसे प्रमुख पं0 अनोखेलाल मिश्र जी हैं। पं0 रामजी मिश्र इनकी ही शैली से तबला वादन अपने शिष्यों को सिखाते हैं। इनकी शिष्य परम्परा में ऐसे कई कलाकार हुए हैं, जो संगीत परम्परा को पूरी तरह समर्पित हैं जैसे–स्टीवन स्लावॉक, होमनाथ, हरप्रीत सिंह, किशनराम, ललित कुमार, देव किशोर बेनर्जी, नारायण मिश्र आदि ऐसे कई कलाकार है जो विदेशों में अपना झंड़ा लहरा रहे हैं।